# पाठ 15. सच्ची मित्रता

## कविता का उद्देश्य
प्रस्तुत कविता सच्चे मित्र के गुणों के बारे में बता रही है। इस कविता का उद्देश्य बच्चों में मैत्री भाव, सहयोग की भावना तथा आपसी प्रेम के गुणों को विकसित करना है।

## कविता का सारांश
सच्चा मित्र अपने मित्र के दुख में उसका साथ देता है। सच्चा मित्र वही होता है जो अपने मित्र के अवगुणों को दूर करके उसे अच्छाई के रास्ते पर ले जाता है। वह हर विपत्ति में अपने मित्र का साथ देता है। जो हमारे सामने मीठे वचन बोलते हैं तथा पीठ पीछे हमारी बुराई करते हैं, ऐसे लोग दुष्ट होते हैं। मूर्ख सेवक, कंजूस राजा, चरित्रहीन स्त्री तथा कपटी मित्र ये चारों काँटे के समान होते हैं। ऐसे लोगों का त्याग करना चाहिए।

## अध्यापन संकेत
बच्चों से **पठन-पूर्व चर्चा** के अंतर्गत दिए गए प्रश्न पूछें। लय के साथ कविता का वाचन करें और बच्चों को अनुसरण करने को कहें। जो शब्द मानक हिंदी के नहीं हैं, उनका हिंदी पर्याय साथ-साथ बताते जाएँ। इस कविता में निहित नीति-उपदेशों को वर्तमान संदर्भ में जोड़ते हुए कुछ उदाहरण दें। पुराने संदर्भ में राम-सुग्रीव तथा कृष्ण-सुदामा के उदाहरण दे सकते हैं।

**देत लेत ............................ गुन ऐहा।।**–इन पंक्तियों द्वारा तुलसीदास जी कहते हैं कि सच्चा मित्र वह है जो अपने मित्र को कुछ देते या उससे कुछ लेते समय अपने मन में किसी प्रकार की दुविधा या शंका नहीं रखता। आवश्यकता पड़ने पर अपने सामर्थ्य के अनुसार सदैव अपने मित्र की सहायता करता है तथा उसके भले के बारे में ही सोचता है। वेदों में लिखा है तथा साधुजन भी कहते हैं कि सच्चे मित्र के गुणों की पहचान विपत्ति के समय ही होती है। जो विपत्ति में साथ दे, उसमें ही सच्चे मित्र के गुण होते हैं।

**आगे कह ............................ भलाई।।**–तुलसीदास जी कहते हैं कि ऐसे मित्र जो तुम्हारे सम्मुख मधुर बने, तुमसे प्रेम दिखाएँ परंतु तुम्हारे पीठ पीछे तुम्हारी निंदा करें, तुम्हारा बुरा चाहें। ऐसे कुटिल विचार रखने वाले कभी मित्र नहीं हो सकते इसलिए ऐसे कुमित्रों का साथ तुरंत छोड़ देने में ही भलाई है।

**सेवक सठ ............................ तोरे।।**–इन पंक्तियों में तुलसीदास जी कहते हैं कि मूर्ख सेवक, कंजूस राजा, दुश्चरित्र स्त्री तथा कपटी मित्र ये चारों जीवन में काँटों के समान होते हैं इसलिए जीवन में मित्र बनाते समय बहुत सोच-विचार करना चाहिए। सुग्रीव कह रहे हैं, हे! प्रभु राम! "आप मुझे अपने सखा के रूप में स्वीकार कर लें।"

**पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–**

- बच्चों से पूछें कि उनके मित्र में कौन-कौन से गुण हैं? उनका कौन-सा गुण उन्हें अधिक प्रभावित करता है?
- क्या उनके मित्र ने मुसीबत के समय उनकी सहायता की है? बच्चों से जानें।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।